

Chapter in 2019 - 2020
Book

अतुल्य भारत संस्कृति और राष्ट्र (भाग - 2)

संरक्षक

डॉ. जी. एस. रोहित,

क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा शाखा, रायपुर (म. प्र.)

सम्पादक

डॉ. सरोज गुप्ता

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग

राज्यीय स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य 'अग्रणी' महाविद्यालय, रायपुर (म. प्र.)

डॉ. संध्या टिकेकर

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, राज्यीय कन्या महाविद्यालय, बीना

डॉ. निशा जैन

प्राध्यापक, राज्यीय कन्या महाविद्यालय, बीना

डॉ. घनश्याम भारती

सहा. प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, राज्यीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गढ़ाकोटा

सहसम्पादक

डॉ. मंगल सिंह

अतिथि विद्वान, राज्यीय नवीन महाविद्यालय, बीहरी (म. प्र.)



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

प्लॉट-508, गली नं. 17, चित्रकूट मार्ग,

दिल्ली-110053

फोन: 08527460252, 09990236819

ईमेल: jspublications@gmail.com



जे.पी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली
इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग पीयर-रिव्यूड, रिफर्ड बुक
(पूर्व-समीक्षित, सान्दर्भिक पुस्तक)

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१६

ISBN 978-93-88522-57-1

प्रकाशक

जे०पी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०६६६०२३६८१६, ०८५२७ ४६०२५२

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ७५०.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

ATULYA BHARAT : SANSKRATI AUR RASTRA

Edited By Dr. Saroj Gupta, Dr. Sandhya Tikekar, Dr. Nisha Jain,
Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Mangal Singh

बुन्देली लोकसंस्कृति बनाम लोकभाषा की एक झलक

डॉ. अफरोज बेगम

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर म.प्र.

मानवीय इतिहास को यदि उठाकर देखा जाए तो लोकसंस्कृति और लोकभाषा शब्द उतने ही प्राचीन हैं, जितने कि स्वयं मनुष्य। मनुष्य ने अपने जीवन में जो कुछ बनाया, चिन्तन या विचार किया, वह सब संस्कृति के अन्तर्गत आता है। मनुष्य के जीवन की वे सभी उपलब्धियाँ जो उसने दर्शन, चिन्तन, धर्म तथा अध्यात्म इत्यादि के क्षेत्र में प्राप्त की, वे सभी तत्त्व संस्कृति, लोक संस्कृति और लोकभाषा में समाहित होती हैं।

आज विशिष्ट वर्ग के हितों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन खपा देने वाला सामान्य अदना वर्ग अपनी लोक संस्कृति तथा लोकभाषा से अलग होता जा रहा है। अदना वर्ग अपनी लोक विरासत को अपनाने की ताकतें लगातार क्षीण करता जा रहा है और किसी भी देश की सबसे बड़ी विरासत है, उस देश की संस्कृति। 'हम शहरवासी, जो चालीस-पचास साल पहले लोकजीवन की धारा से अविच्छिन्न रूप से जुड़े थे तथा अब एक पृथक् सम्यता में जीते हैं, देश और विश्व के आधुनिक मंच पर लोक संस्कृति की उपस्थिति देखकर प्रायश्चित्त भरे जातीय गर्व से भर उठते हैं, लेकिन दूसरे क्षण अपने को इस अनुभव से बचा नहीं पाते कि लोकसंस्कृति के कलात्मक रूप और चिन्ह प्रदर्शित माल बनकर हमें कंपल मजा—एक अनैतिक तृप्ति देते हैं। साधारण लोक की भाँति शहरवासी बुद्धिजीवी भी अपना संस्कृति से अलग-अलग हैं। फर्क यह है कि साधारण लोक रूढ़ियों और विकृतियों में फसे होने के कारण अपनी संस्कृति के सार तक पहुँच नहीं पाता, जबकि शहरी

- | | | |
|-----|--|-----|
| 9. | भारतीय संस्कृति में निहित आश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिकता
डॉ. किरण आर्या | ६२ |
| 10. | बुन्देली लोकसंस्कृति बनाम लोकभाषा की एक झलक
डॉ. अफ़रोज बेगम | १०२ |
| 11. | भारतीय संस्कृति और मानव-मूल्य
डॉ. सरोज बाला श्याम विश्नोई | ११० |
| 12. | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य में राष्ट्रीय नवजागृति
डॉ. सीमा अग्रवाल, डॉ. मंजू गुप्ता | ११६ |
| 13. | भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल का महत्व
नीरज कुमार सिन्हा | ११६ |
| 14. | भारतीय संस्कृति और मानव-मूल्य
डॉ. राजेश कुमार टाकुर | १२७ |
| 15. | 'श्रीरामचरितमानस' में प्रकृति-चित्रण एवं जनजीवन संस्कृति
अवधेश कुमार | १४० |
| 16. | भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप
डॉ. गीता सिंह | १४८ |
| 17. | आश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता
सौरभ देवा | १५५ |
| 18. | भारतीय संस्कृति और मानव-मूल्य
नरेश ऋत्विक् | १६४ |
| 19. | संस्कृति के व्यापक संदर्भ
डॉ. अनिता वर्मा, डॉ. मंजू गुप्ता | १६६ |
| 20. | भारतीय पत्रकारिता का अतुल्य स्वरूप
अरुण कुमार खोबरे | १७५ |
| 21. | जीवन मूल्यों की निरंतरता का रहस्य
डॉ. एस.सी. राय, डॉ. (श्रीमती) प्रवीण ज्ञान | १८४ |